पाठक मंच

'बिस्मिल' की विरासत से कुत्सित खिलवाड़

हर शासक और शोषक वर्ग जनता और उसके नायकों के विचारों को दबाने की कोशिश करता है परन्तु जब वे विचार नहीं दबते और उन विचारों की स्वीकार्यता अवाम में हो जाती है तब वह जनमानस से उन विचारों को विस्मृत करने की लगातार कोशिशें करता रहता है। जनता फिर भी अपने नायकों को और उनके विचारों को नहीं भुलाती। तब शोषक वर्ग उनके विचारों को गन्दा करने, उन्हें बनाकर जनता को उन विचारों से काटने की कोशिश करता है।

आज ऐसी कोशिशें वैसे तो पूरे देश के पैमाने पर शासक वर्ग द्वारा सुनियोजित ढंग से की जा रही हैं, लेकिन जहाँ मैं रहता हूँ वहाँ के प्रतिक्रियावादी हिन्दुत्ववादियों के कारनामों की तरफ पाठकों का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। मैं पूर्वी-उत्तर प्रदेश के ऐतिहासिक शहर गोरखपुर में रहता हूँ। यहाँ पर क्रान्तिकारी रामं प्रसाद बिस्मिल ने 19 दिसम्बर 1927 को जिला कारागार में देश की आज़ादी के लिए हँसते-हँसते फाँसी के फन्दे को चूमा था।

बिस्मिल की शहादत ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष के साथ ही हिन्दू-मुस्लिम एकता का भी प्रतीक है। पण्डित राम प्रसाद ने अपने नाम के साथ 'बिस्मिल' जोड़कर और क्रान्तिकारी अशफाक उल्लाखाँ से गहरी मित्रता के द्वारा साम्प्रदायिक सदभावना की एक मिसाल कायम की थी।

लेकिन यहाँ की प्रतिक्रियावादी हिन्दूवादी ताकतें उन्हें साम्प्रदायिक रंग देते हुए उन्हें हिन्दूवादी बताकर, उनके विचारों को विकृत करने के साथ ही साथ उन्हें पूजक बनाने की भी कोशिश कर रही हैं, ताकि हिन्दू लोग बिस्मिल की पूजा करते हुए अन्य धर्मों के लोगों का खून बहायें। इससे प्रतिक्रियावादी एक तीर से दो निशाना लगा रहे हैं। एक तो बिस्मिल के असली विचार नष्ट हो जायेंगे दूसरे वे जनता को बाँटकर उनकी लाशों पर वोट की राजनीति करेंगे।

19 दिसम्बर के दिन तमाम हिन्दूवादी संगठन बिस्मिल के शहादत स्थल शाहपुर जेल में जाकर, वहाँ के माहौल को भगवा बनाकर बिस्मिल की मूर्ति पर पूजा-अर्चना, हवन आदि करते हुए अपने भाषणों में दूसरे सम्प्रदाय के लोगों को गालियाँ देने के साथ ही उन्हें दोयम-दर्जे का नागरिक बनाकर रखने की घोषणा करते हैं और भारत को धर्म-निरपेक्ष राज्य से हिन्दू राष्ट्र बनाने का मंसूबा बाँधते हैं। ऐसा करके वे लोग न केवल जन-भावनाओं के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं, बल्कि शहीदों के विचारों को लांछित और अपमानित कर रहे हैं।

हमें इन तथाकथित राष्ट्रवादियों से इतिहास को बचाना होगा। किसी चिन्तक ने ठीक ही कहा है कि अगर तुम अतीत पर पिस्तौल से गोली दागोगे, तो भविष्य तुम पर तोप से गोले बरसायेगा।

प्रमोद कुमार
गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।

स्टैच्यू ऑफ लिबर्टी

आज सुबह ही तो
मध्य पूर्व से आने वाली
उदास और क्रुद्ध हवाओं ने
मेरे चेहरे पर
खून के चीथड़े,
कानों में बेबस चीखें,
और आँखों में पाशविकता के दृश्य
बिखेर दिये हैं,
वे ही
जो पिछली रात
अबू ग़रेब के यातनागृहों में
घटित हुए थे।

दोपहर होते-होते, मैं
एक सौ साठ डिग्री तक झुक चुकी हूँ
और शाम तक पूरी तरह ज़मीन पर आ जाऊँगी,
नहीं तो,
डॉलर के दैत्य मेरे शिखर पर
स्वतन्त्रता की झूठी पताका फहरा देंगे।

प्रदीप चौहान 'शान्ति'
करावलनगर, दिल्ली।

आह्वान

नैश तम छाया हुआ यह आज है
अब तुम्हें जाना पड़ेगा रोशनी हित
कब तलक ढूँढोगे स्वर्णिम प्रात की सुन्दर छटा
अन्धकारों की दया पर;
मध्यरात्रि में तुम्हें चिंगारियाँ बोनी पड़ेंगी,
तुम्हें कल का सूर्य बन उगना पड़ेगा।
जो सुनाते हैं तुम्हें इस नियति की कहानियाँ
ध्वंस करने के लिए यह नियति
तुमको है सुनाती
भैरवी हुंकार की अति ओजमय कुर्बानियाँ
जल रही जो पीड़ा की ज्वाला तुम्हारे हृदय में
रोशनी उससे दिखाओ स्वयं को
क्रान्ति का आह्वान सीने में लिए
नौजवानो हिन्दुस्तान के, उठो!
तुम्हें उठना है नहीं कुछ माँगने हित,
नरभक्षियों से नहीं कुछ याचना हित,
माँगना भी क्या सर्वजग, सर्वसृष्टि है तुम्हारी
छीन लो अधिकार तेरा हर दिवस हर स्वप्न पर है।
हो सजग आवाज़ तुमको दे रहा हूँ क्रान्ति की,
मैं नहीं कहता समक्ष तुम्हारे बातें भ्रान्ति की,
तुम सचेतन हो अगर तो ज़रा सोचो,
स्वयं अपने से कुछेक प्रश्न यह पूछो,
भूख से वे लोग मरते, जो उगाते अन्न हैं,
हैं पसलियाँ दिख रहीं, हैं होंठ सूखे
भूख से हैं तिलमिलाते वही बचपन
सूखकर बिन दूध होते माँ के स्तन,
पूछ लो, ये लोग आख़िर कौन हैं?
कौन हैं जो ठण्ड में मरते रहे
वस्त्र गोदामों में जब भरते रहे,
कौन हैं वे आर्तनादी भूख में
अन्न गोदामों में जब सड़ते रहे।
कौन हैं जो जंगलों में भी बनाते हैं बसेरा
और अपने खून से अट्टालिका निर्माण करते
और किनकी अस्थिमज्जा चूसकर नरभक्षी नर ये
सभ्य खुद को कह रहा—वे निर्वासित नर कौन हैं?
क्या कभी देखा है तुमने?
मर रहे असहाय नर को
सभ्यता सिरमौर के प्रांगण
महानगरों में आकर।
सभ्यनर की स्वार्थ शिक्षा
मुस्कराकर निकल जाती
और एक जीवन तड़पकर शान्त है।
कह रही हैं नीतियाँ बचपन बचाओ,
लूटकर माँ-बाप के संसार को पुण्यकर्मी

(पेज 16 पर जारी)

जिससे प्रदेश भर के मुसलमानों के बीच यह सन्देश जाये कि एकमात्र वे ही मुसलमानों की रक्षा कर सकते हैं। बयानबाजियों का यह सिलसिला चुनावों की तिथियाँ नज़दीक आते जाने के साथ ही और तेज़ होता जा रहा है।

एक तरफ हिन्दुत्ववादी साम्प्रदायिक फासीवादी शक्तियाँ और दूसरी ओर चुनावबाज धर्मनिरपेक्षता के अलमबरदार– दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। 'क्रिया-प्रतिक्रिया' का यही ख़तरनाक खेल जब आगे बढ़ता है तो किसी भी समय भीषण दंगें के रूप में बदल जाता है। वैसे भी 'बाँटों और राज करो' हुकूमती जमातों का पुराना खेल है। आज 'जाति-धर्म', के आधार पर साम्प्रदायिक बँटवारे के इस खेल में किसी न किसी रूप में सभी चुनावबाज पार्टियां शामिल हैं।

पूर्वी उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में आक्रामक हिन्दुत्ववादी साम्प्रदायिक राजनीति का पिछले एक दशक में काफ़ी फैलाव हुआ है। उनकी हिन्दू युवा वाहिनी के बैनर तले गाँवों-कस्बों तक निम्न मध्य वर्ग बेरोजगार, युवा संगठित हो रहे हैं। उनके जीवन की हताशा-निराशा सही दिशा न मिलने के कारण उन्हें इस साम्प्रदायिक राजनीति की चपेट में ले रही हैं। एक ओर जहाँ यह भारतीय पूँजीवाद के संकट की देन है जो अब गरीब-निम्नमध्यवर्ग के युवाओं को भविष्य की नाउम्मीदी के सिवा और कुछ नहीं दे सकती तो दूसरी ओर यह क्रान्तिकारी शक्तियों की कमज़ोरी की भी देन है जिससे युवाओं को भविष्य का सही रास्ता नहीं दिख रहा है। योगी की गिरफ्तारी के बाद की हिंसक घटनाओं में हिन्दू युवा वाहिनी के इन्हीं कार्यकर्त्ताओं की ही सक्रियता अधिक नज़र आयी। आम हिन्दू धार्मिक भावनाओं के कारण योगी के प्रति सहानुभूति भले रख रहा हो सड़क की कार्रवाई से वह दूर ही रहा।

पूँजीवाद के मौजूदा संकट से करोड़ों करोड़ नौजवानों का भविष्य जिस तरह अँधेरी चक्करदार गलियों में भटक रहा है वह फासीवादी ताकतों के फलने-फूलने के लिए अनुकूल खाद-पानी मुहैय्या करा रहा है। गोर्की ने एक जगह लिखा है कि निम्न मध्यवर्ग के निराश और पीले-बीमार चेहरे वाले नौजवान फासिस्टों की फौज के सिपाही बनते हैं। यही नौजवान आज हमारे देश में एक नये क्रान्तिकारी परिवर्तन की विराट ऊर्जा से भी सम्पन्न हैं। लेकिन इस ऊर्जा को इस दिशा में सक्रिय करने के लिए युवा आबादी के बीच क्रान्तिकारी विचारों के निरन्तर प्रचार और उन बुनियादी मुद्दों को उभारने के लिए संघर्ष-आन्दोलन की विविध कार्रवाइयों की जरूरत होगी जिन्हें साम्प्रदायिक फासीवादी ताकतें ही नहीं सभी पूँजीवादी राजनीतिक पार्टियाँ भी दबाती रहती हैं। ये मुद्दे हैं देशी-विदेशी पूँजी की लूट के मुद्दे, महँगाई, बेरोज़गारी, आम जनता के उत्पीड़न और जनतांत्रिक अधिकारों के मुद्दे आदि। शहीदे आज़म भगत सिंह ने भी कहा था **''लोगों को परस्पर लड़ने से रोकने के लिए वर्ग चेतना की ज़रूरत है। गरीब मेहनतकशों और किसानों को स्पष्ट समझा देना चाहिए कि तुम्हारे असली दुश्मन पूँजीपति हैं, इसलिए तुम्हें इनके हथकण्डों से बचकर रहना चाहिए और इनके हत्थे चढ़कर कुछ न करना चाहिए। संसार के सभी ग़रीबों के, चाहे वे किसी भी जाति, रंग, धर्म, या राष्ट्र के हों अधिकार एक ही हैं। तुम्हारी भलाई इसी में है कि तुम धर्म, रंग नस्ल और राष्ट्रीयता के भेदभाव मिटाकर एकजुट हो जाओ और सरकार की ताकत अपने हाथों में लेने का प्रयत्न करो।''**

साम्प्रदायिक फासीवाद का मुकाबला करने में नौजवानों को भगत सिंह की इस विरासत को हमेशा अचूक हथियार के रूप में इस्तेमाल करना चाहिए। इसके साथ ही नौजवानों को सच्ची धर्मनिरपेक्षता से भी परिचित कराया जाना चाहिए। सच्ची धर्मनिरपेक्षता सर्वधर्मसमभाव कदापि नहीं हो सकती। सच्ची धर्मनिरपेक्षता है राज्य के कामों से धर्म का पूरी तरह से अलगाव और केवल व्यक्तिगत आस्था के रूप में ही धर्म का बने रहना। हमारे देश में सर्वधर्मसमभाव पर आधारित नेहरूवादी धर्मनिरपेक्षता का ही डंका बजाया जाता है। नकली वामपन्थी पार्टियाँ भी इसी का गुन गाती हैं जबकि देश में साम्प्रदायिक फासीवादी राजनीति के फलने-फूलने में इस तथाकथित धर्मनिरपेक्षता की भी अहम भूमिका रही है।

विगत बीसवीं सदी के इतिहास ने सिद्धकर दिया है कि कोई भी पूँजीवादी निजाम आज सेक्युलर हो ही नहीं सकता। अपनी लूट की हिफ़ाज़त के लिए सरमायेदारों को भी न केवल धर्म के आधार पर जनता को बाँटना है, बल्कि उसे अन्धविश्वास, रहस्यवाद और भाग्यवाद की अँधेरी खोह में फँसाये रखना भी जरूरी है। इतिहास गवाह है कि सच्चा धर्मनिरपेक्ष समाज आज केवल मेहनतकश जनता का राज--सच्चा समाजवाद ही दे सकता है। परिवर्तनकामी नौजवानों को यह बात अच्छी तरह समझनी होगी कि साम्प्रदायिकता की समस्या का समाधान नेहरूवादी धर्मनिरपेक्षता या सर्वधर्मसमभाव के नारे में नही बल्कि एक ऐसे सामाजिक राजनीतिक ढाँचे में है जिसमें धर्म लोगों का व्यक्तिगत विश्वासमात्र हो, जिसमें वैज्ञानिक जीवन दृष्टि समाज की मार्गदर्शक शक्ति हो और जहाँ शिक्षा, संचार माध्यमों और राजनीति सहित सार्वजनिक जीवन के किसी भी क्षेत्र में धर्म का लेशमात्र भी दखल न हो। यह नया भारत एक समाजवादी भारत होगा जो मेहनतकश जनता के इंक़लाबी संघर्षों के साँचे में ढलकर तैयार होगा।

शहीदे आज़म भगत सिंह और उनके साथियों ने भी आज से 75 साल पहले यही कहा था। उनसे भी पहले गदर पार्टी के क्रान्तिकारियों ने बार-बार ज़ोर देकर कहा था कि राजनीति और सामाजिक जीवन से धर्म को बिल्कुल अलग रखा जाना चाहिएं। अपनी इस विरासत को मजबूती से थामकर ही हम साम्प्रदायिकता के खिलाफ संघर्ष को आगे बढ़ा सकते हैं।

पाठक मंच

(पेज 2 से जारी)

दिख रहे हैं दूर से
नीतियों से लाखों को श्मशान कर।
यह प्रणाली लाभ की पूँजी की धुर पर जब तक चलेगी,
प्रात में बचपन, दोपहरी में जवानी भी लुटेगी।
साँझ को लूटेगी जीवन, अंधकारों में तुम्हारी पीढ़ियों को लूट लेगी।
एक जीवन के लिए इस नर्क से जीवन की ख़ातिर
पीढ़ियाँ तुमको क्या कहेंगी ऐ स्वार्थी नर
स्वार्थ को त्यागो, मोह से जागो, शोषित ज़िन्दगी के
मुक्तिकामी मुक्त गगन में ज़रा उड़कर देखो ले सके हर व्यक्ति अपना अंश, शोषण दंश से बच
आज तेरा ओज, तेरी बुद्धि, तेरी प्राण-ज्वाला क्रान्ति की आँधी, तिरस्कृति आज तेरी मुक्त काया
मुक्त हर किलकारियों के लिए तुमको माँगता हूँ।

प्रेमप्रकाश, दिल्ली